काला-आज़ार

टूट जाती हैं उम्मीदें

आलेखः अंजुम नईम
फोटोः जावेद आलम

अमेरिका और भारत के चिकित्सक एंव वैज्ञानिक विश्व की तीसरी सबसे घातक बीमारी के लिए सस्ती दवा तैयार कर रहे हैं।

बिहार में हाजीपुर से लगभग आठ किलोमीटर दूर आदिवासी गांव जमालपुर मुसहरी एक द्वीप की तरह है, जिसकी सीमा के भीतर कदम रखने में भी बाहरी लोग बहुत घबराते हैं।

अपनी टूटी-फूटी झोंपड़ी से थोड़ी दूर नशे में धुत पड़ा सिनेसर मांझी सच्चाई से आंखें मूंद लेना चाहता है। झोंपड़ी के बाहर उसके बीमार बच्चे- दो बेटे और एक बिटिया- सूनी आंखों से आते-जाते लोगों को देख रहे हैं।

ये बच्चे कई महीनों से तेज़ बुखार से पीड़ित हैं। उनकी तिल्ली का आकार बढ़ चुका है। ये भयानक काला-आज़ार यानी काला-ज्वर यानी विसरल लीशमेनिएसिस बीमारी के लक्षण हैं। उर्दू में काला-आज़ार का अर्थ है 'काली बीमारी'। अगर इलाज न किया गया तो परजीवी से होने वाली यह बीमारी लगभग घातक सिद्ध होती है। यह आकार में मच्छर से भी एक-तिहाई छोटी बालू-मक्खी यानी सैंडफ़्लाई के काटने से फैलती है। दुनिया भर में इस बीमारी से

ऊपरः सिनेसर मांझी के बच्चों में घातक काला-आज़ार बीमारी के लक्षण पाए गए हैं।

ऊपर दाएंः जालंधर राम एवं उनके बीमार बच्चे पिंकू और भुट्टो।

बाएंः हाजीपुर अस्पताल के भीड़भाड़ वाले काला-आज़ार वार्ड में चिंतित माता-पिता और उनके बीमार बच्चे।

पीड़ित होने वाले कुल रोगियों में से 90 प्रतिशत रोगी भारत, नेपाल, सूडान और ब्राजील में होते हैं।

बीमार और ज़रूरतमंद लोगों की मदद के लिए अपने पति और सक्रिय सामाजिक कार्यकर्त्ता सुधीर कुमार अकेला के साथ बीमारी से प्रभावित इन गांवों की देखभाल कर रही गीता देवी कहती हैं, ''अकेले इसी बस्ती में 20 लोग इस बीमारी के कारण दम तोड़ चुके हैं और 50 लोग गंभीर रूप से बीमार हैं।''

ये दोनों पिछले कई वर्षों से लोगों को बीमारी के बचाव के बारे में जानकारी दे रहे हैं और अंतिम संस्कार की सेवा भी प्रदान कर रहे हैं, लेकिन अब वे थोड़ा निराश होने लगे हैं। काला-आज़ार मांझी की पत्नी, दो बेटियों, एक बहिन, साले, भतीजे, भतीजी, भाई, भाभी और दो अन्य भतीजियों की जान ले चुका है। बाकी लोगों के बचने की उम्मीद भी बहुत कम है। हम आखिर कितने लोगों की मदद कर सकते हैं? देवी पूछती हैं।

जालंधर के घर में भी ऐसा ही दुख का पहाड़ टूट पड़ा है। अपनी पत्नी को बचाने के लिए उसने अपनी पूरी जमा पूंजी लगा दी, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। अब वह जीवन और मृत्यु के बीच झूलते अपने दोनों बच्चों की सांसें गिन रहा है।

''मैं मरा नहीं, लेकिन ज़िंदगी का नामोनिशां भी नहीं बचा है,'' दांते के ये शब्द यहां सच्चाई बन गए हैं। राम रोते हुए कहता है, ''मेरे पास जो कुछ भी था, मैंने अपनी पत्नी के इलाज पर खर्च कर दिया। अब बच्चों को बचाने के लिए मेरे पास कुछ भी नहीं बचा है। वे कल का सूरज देख भी पाएंगे या नहीं, क्या पता?'' उसने एक सांस में सच्चाई बयान कर दी है जबकि उसकी भीगी हुई आंखें टूटी चारपाई पर पड़े अपने बेटे भुट्टो और बेटी पिंकू पर टिकी हुई है।

राम ने बचे-खुचे पैसों से फंगिज़ोन की दो शीशियां खरीद लीं क्योंकि एक प्राइवेट चिकित्सक ने यह दवा देने की सलाह दी थी। उसने दोनों बच्चों को यह दवा दे दी है। लेकिन, दवा के पूरे कोर्स के लिए 10 शीशियां और चाहिएं जिनकी कीमत 6,000 रुपये है। यह उसके बूते से बाहर की बात है।

लेकिन, लोग सरकारी अस्पताल में इलाज क्यों नहीं करा लेते? वहां मुफ्त इलाज होता है।

अकेला कहते हैं, ''इन अस्पतालों की दशा बड़ी दयनीय है। रोगी जब सरकारी अस्पताल में जाते हैं तो मेडिकल असिस्टेंट उन्हें यह कहते हुए वहां की बदइंतजामी के बारे में सावधान कर देते हैं कि अगर वे मदद के लिए वहां गए तो मर जाएंगे। साथ ही, उन्हें प्राइवेट अस्पताल में जाने का सुझाव दे देते हैं। मुसीबत में लोग उसी ओर दौड़ते हैं जिस ओर आशा की कोई हल्की-सी भी किरण दिखाई दे रही हो।''

''जहां भी उम्मीद नज़र आती है, काला-आज़ार से दुखी लोग दौड़ पड़ते हैं।''

काला-आज़ार टास्क फ़ोर्स के प्रमुख डॉ. सी. पी. ठाकुर एक बीमार बच्चे की जांच करते हुए।

पूर्व केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री तथा काला-आज़ार के जाने-माने विशेषज्ञ डॉ. सी.पी. ठाकुर मानते है कि स्थिति बहुत खराब है। वह कहते हैं, ''बिहार के 38 में से 31 जिले इस समस्या से ग्रस्त हैं और काला-आज़ार भयंकर रूप लेता जा रहा है और विशेष रूप से हाजीपुर से लेकर नेपाल की सीमा तक के तराई क्षेत्र में स्थिति बहुत खराब है। सरकारी आंकड़ों से केवल उन रोगियों की संख्या का पता लगता है जिनका पंजीकरण सरकारी अस्पतालों में होता है और यह संख्या 45,000 को पार कर चुकी है। अन्य रोगी जो प्राइवेट क्लिनिकों में जाते हैं और महंगा इलाज जारी नहीं रख पाते तथा मर जाते हैं, उनका कोई हिसाब ही नहीं है।''

स्वास्थ्य विशेषज्ञों के अनुसार हालांकि इस रोग से हर साल 5,00,000 से भी अधिक लोग पीड़ित होते हैं। लेकिन इसकी ओर बहुत कम ध्यान दिया गया है। इनमें से चालीस प्रतिशत रोगियों की जान चली जाती है। इस तरह हृदय रोग और कैंसर के बाद यह तीसरी सबसे घातक बीमारी बन गई है। मुख्य रूप से विकासशील देशों के ग्रामीण और पिछड़े इलाकों तक सीमित रहने के कारण इसकी रोकथाम के लिए सुसंगठित प्रयास नहीं किए गए हैं।

अन्य ऊष्णकटिबंधीय बीमारियों की भी लगभग यही कहानी है जो आमतौर पर गरीब तबके पर हमला बोलती हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन का कहना है कि 1975 से 1999 के बीच बाज़ार में 1,400 नई दवाइयां पहुंची हैं, लेकिन उनमें से केवल 13 दवाइयां ही ऊष्ण कटिबंधीय बीमारियों के उपचार के काम आ सकती है। काला-आज़ार की रोकथाम की सबसे बड़ी समस्या ही दवाइयों का न मिलना, महंगा होना और इन तक पहुंच न होना है।

ठाकुर कहते हैं, ''बिहार में काला-आज़ार का पता करीब एक शताब्दी पहले लगा। मलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम के अंतर्गत 1964 तक लगातार डी.डी.टी का छिड़काव करने के कारण बालू-मक्खियों का प्रजनन नहीं हुआ। लेकिन, छिड़काव बंद करने के बाद 1970 के दशक में बीमारी के मामले तेजी से बढ़ गए।''

1977 तक बिहार के वैशाली, मुजफ़्फ़रपुर, सीतामढ़ी और समस्तीपुर जिलों में काला-आज़ार भयंकर रूप से फैल गया। लगभग 1,25,000 मामले दर्ज़ हुए जिनमें से 4,700 लोगों की मृत्यु हो गई। उन दिनों केवल एक ही दवा 'सोडियम एंटिमनी ग्लुकोनेट' उपलब्ध थी लेकिन वह अधिक असरदार नहीं थी। कीटनाशक दवाइयों का छिड़काव फिर से शुरू कर दिया गया जिससे 1980 के दशक में हालात में काफी सुधार हुआ।

इस बीमारी ने 1991-92 में पलटवार किया जिसके कारण 2,50,000 लोग पीड़ित हुए और 10,000 से अधिक की जान चली गई। सरकार का कहना है कि वह 1991 की भयंकर स्थिति को फिर से न आने देने के लिए अपने-आप को तैयार कर रही है। काला-आज़ार की रोकथाम के लिए कार्यदल का गठन कर दिया गया है ताकि कम कीमत पर दवाइयां उपलब्ध हो सके। साथ ही स्वास्थ्य क्षेत्र में भी बड़े पैमाने पर सुधार किए जाएंगे।

ठाकुर के अनुसार, ''तब से स्थिति में बहुत सुधार

सैन फ्रांसिस्को, कैलिफ़ोर्निया में काला-आज़ार की दवा का परीक्षण करने वाले इंस्टीट्यूट फ़ॉर वनवर्ल्ड हेल्थ की प्रयोगशाला में विक्टोरिया हेल।

एडी बेरी ऑरिज फ़ोटोग्राफ़र्स

हुआ है और अब हमारे पास खास तरह की असरदार दवाइयां मौजूद हैं। थोड़ा कीमती होने के बावजूद एम्फोटेरिसिन बी असरदार दवा है और इसके अन्य कुप्रभाव भी कम पड़ते हैं।'' वह कार्यदल का नेतृत्व कर रहे हैं।

भारतीय स्वास्थ्य विशेषज्ञ अमेरिका में औषधि-विज्ञान की प्रगति पर भी नज़र रख रहे हैं। वह कहते हैं कि इस नई प्रगति से काला-आज़ार के उपचार में बड़ी सफलता मिल सकेगी।

पटना स्थित राजेंद्र स्मृति चिकित्सा विज्ञान शोध संस्थान के डॉ. प्रदीप दास कहते हैं, ''अमेरिकी औषधि निर्माता कंपनी 'इंस्टीट्यूट फॉर वन वर्ल्डहेल्थ' ने स्वयं अपनी 'पैरोमो-माइसिन' दवा बनाई है। इस पर अभी चौथे चरण के नैदानिक परीक्षण चल रहे हैं। अब तक इसके उत्साहवर्द्धक परिणाम मिले हैं और यह शायद सबसे सस्ती दवा भी साबित हो।'' यह संस्थान काला-आज़ार पर शोध भी कर रहा है।

सैन फ्रांसिस्को, कैलिफ़ोर्निया आधारित 'वन वर्ल्ड हेल्थ' कंपनी की संस्थापक विक्टोरिया हेल वर्ष 2000 में बिहार आईं। उन्होंने कहा, ''काला-आज़ार के रोगियों को देखने से पहले तक मैंने लोगों के चेहरे पर इतनी भारी निराशा कभी नहीं देखी थी।'' तभी से उनका संस्थान भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद के साथ मिल कर काला-आज़ार के कारगर और सस्ते इलाज की खोज कर रहा है। एजेंसियों को नैदानिक परीक्षण करने के लिए बिल एंड मेलिंडा गेट्स फ़ाउंडेशन ने आर्थिक सहायता दी है।

हैदराबाद, आंध्र प्रदेश में स्थित औषधि निर्माता कंपनी ग्रैंड फार्मा लिमिटेड 'वन वर्ल्ड हेल्थ' तथा अन्य सहयोगकर्त्ताओं के साथ मिलकर काम कर रही है। काला-आज़ार के उपचार के लिए इसे भारत के औषधि महानियंत्रक से पैरोमोमाइसिन आइ एम इंजेक्शनों के लिए विनियामक स्वीकृति मिल चुकी है। ग्रैंड फार्मा ने इसे सर्वसुलभ बनाने के लिए वैश्विक स्तर पर इसे बनाना स्वीकार कर लिया है।

राजेंद्र संस्थान में पैरोमोमाइसिन के नैदानिक परीक्षण चल रहे हैं। संस्थान के डॉ. दास का कहना है कि वहां 50 रोगियों का उपचार किया जा रहा है। वह कहते हैं, ''हम औषधि की क्षमता के विश्लेषण और इसके कुप्रभाव को कम से कम करने पर अपना पूरा ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। अब तक न तो इसके किसी कुप्रभाव का पता चला है और न इसके असर की क्षमता पर कोई सवाल उठा है। इसकी प्रभाव क्षमता 93.4 प्रतिशत पाई गई है। इसलिए इस औषधि को सुरक्षित, प्रभावी और सस्ता माना जा सकता है। अब इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि यह सर्वसुलभ हो सके।''

इस लेख के बारे में अपने विचार editorspan@state.gov पर भेजिए।

नीचे: पटना, बिहार में राजेंद्र प्रसाद मेमोरियल रिसर्च इंस्टीट्यूट ऑफ़ मेडिकल साइंसेज में काला-आज़ार का इलाज करा रहे 50 मरीजों में से एक।

नीचे दाएं: डॉ. प्रदीप दास के अनुसार काला-आज़ार की प्रभावी दवा ठीक कीमत पर उपलब्ध है लेकिन इस तक लोगों की पहुंच होनी चाहिए।